eISSN 3139-2377

RESEARCH WORK

A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal

Volume 02, Issue 05, May 2026

डिजिटल शासन और भारतीय लोकतंत्रः अवसर, चुनौतियाँ एवं भविष्य की दिशा

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 20 May 2026 Accepted & Reviewed: 25 May 2026, Published: 31 May 2026

Abstract

इक्कीसवीं सदी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शासन की प्रकृति, स्वरूप तथा कार्यप्रणाली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। डिजिटल शासन आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बन चुका है, जिसके माध्यम से शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, सहभागी एवं प्रभावी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। भारत में डिजिटल शासन की अवधारणा विशेष रूप से "डिजिटल इंडिया" कार्यक्रम के आरम्भ के पश्चात तीव्र गति से विकसित हुई है। आधार, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ई–गवर्नेंस पोर्टल, जनधन योजना, डिजिलॉकर, कोविन, जीएसटी नेटवर्क, ई–कोर्ट्स, ई–पंचायत तथा विभिन्न ऑनलाइन नागरिक सेवाओं ने शासन की प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की है। यह शोध–पत्र भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल शासन की भूमिका, प्रभाव, अवसरों एवं चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि डिजिटल शासन ने प्रशासनिक दक्षता, सेवा वितरण, पारदर्शिता तथा नागरिक सहभागिता को सुदृढ़ किया है। साथ ही डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता तथा तकनीकी असमानता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध–पद्धति का उपयोग किया गया है।

मुख्य शब्द– डिजिटल शासन, भारतीय लोकतंत्र, ई–गवर्नेंस, डिजिटल इंडिया, नागरिक सहभागिता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, डिजिटल विभाजन।

Introduction

इक्कीसवीं सदी को सूचना, संचार एवं डिजिटल प्रौद्योगिकी की सदी के रूप में जाना जाता है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग तथा मोबाइल प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शासन एवं प्रशासन भी इस परिवर्तन से अछूते नहीं रहे हैं। परिणामस्वरूप पारंपरिक प्रशासनिक व्यवस्था के स्थान पर डिजिटल तकनीकों पर आधारित एक नवीन शासन मॉडल विकसित हुआ है, जिसे डिजिटल शासन कहा जाता है। डिजिटल शासन का आशय शासन की प्रक्रियाओं, सेवाओं, निर्णय–निर्माण तथा नागरिक सहभागिता को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से अधिक प्रभावी, पारदर्शी, उत्तरदायी तथा नागरिक–केंद्रित बनाना है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में नागरिकों की सहभागिता, सूचना तक पहुँच, पारदर्शिता तथा जवाबदेही को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। डिजिटल तकनीकों के विकास ने इन लोकतांत्रिक मूल्यों को नई शक्ति प्रदान की है। आज नागरिक ऑनलाइन माध्यमों से सरकारी सेवाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं, शिकायतें दर्ज करा रहे हैं, नीतिगत सुझाव दे रहे हैं तथा शासन की विभिन्न प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। इस प्रकार डिजिटल शासन लोकतंत्र के संचालन को अधिक समावेशी और सहभागी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ लगभग डेढ़ अरब की जनसंख्या, भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता तथा विशाल भौगोलिक विस्तार शासन को जटिल बनाते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात

भारत ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ करने तथा प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किए। किन्तु बढ़ती जनसंख्या, प्रशासनिक जटिलताओं, भ्रष्टाचार, लालफीताशाही तथा सेवा वितरण की समस्याओं ने शासन व्यवस्था के समक्ष अनेक चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया। भारत में डिजिटल शासन की अवधारणा का विकास 1990 के दशक में कंप्यूटरीकरण की प्रारंभिक पहलों से आरम्भ हुआ, जिसे आगे चलकर राष्ट्रीय ई–गवर्नेंस योजना तथा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने व्यापक रूप प्रदान किया। वर्ष 2015 में प्रारम्भ किए गए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत डिजिटल अवसंरचना का विकास, सरकारी सेवाओं का ऑनलाइन वितरण तथा नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किए गए। आधार, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस, डिजिलॉकर, भारतनेट, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, कोविन प्लेटफॉर्म, ई–कोर्ट्स, ई–पंचायत तथा मायगाव, जैसे अनेक डिजिटल प्लेटफॉर्म इस दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

डिजिटल शासन ने भारतीय लोकतंत्र में पारदर्शिता, जवाबदेही तथा प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थियों तक पहुँचाने, भ्रष्टाचार को कम करने, वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने तथा नागरिक सेवाओं को सरल और सुलभ बनाने में डिजिटल तकनीकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने शासन की निरंतरता बनाए रखने, टीकाकरण अभियान को सफल बनाने तथा नागरिकों तक आवश्यक सेवाएँ पहुँचाने में अत्यंत प्रभावी योगदान दिया। इसके बावजूद डिजिटल शासन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता, तकनीकी साक्षरता की कमी, इंटरनेट की असमान उपलब्धता तथा ऑनलाइन दुष्प्रचार जैसी समस्याएँ लोकतांत्रिक मूल्यों और नागरिक अधिकारों के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के मध्य डिजिटल पहुँच में असमानता तथा सामाजिक–आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की सीमित डिजिटल भागीदारी लोकतांत्रिक समावेशन के समक्ष गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार नागरिकों के व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा तथा डिजिटल निगरानी के प्रश्न भी लोकतांत्रिक विमर्श के केंद्र में हैं। वर्तमान समय में जब शासन की अधिकांश प्रक्रियाएँ तेजी से डिजिटलीकृत हो रही हैं, तब यह आवश्यक हो जाता है कि भारतीय लोकतंत्र पर डिजिटल शासन के प्रभावों का समग्र एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया जाए। यह समझना भी आवश्यक है कि डिजिटल तकनीकें लोकतंत्र को किस सीमा तक सुदृढ़ कर रही हैं तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध–पत्र डिजिटल शासन की अवधारणा, उसके विकास, भारतीय लोकतंत्र पर उसके प्रभाव, उपलब्धियों, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि डिजिटल शासन केवल प्रशासनिक सुधार का माध्यम नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण तथा नागरिक सशक्तिकरण की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया भी है।

2. अध्ययन की आवश्यकता (Need of the Study)– डिजिटल युग में शासन की प्रकृति तेजी से बदल रही है। नागरिक सेवाओं का डिजिटलीकरण लोकतंत्र की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि भारतीय लोकतंत्र पर डिजिटल शासन के प्रभाव का समग्र अध्ययन किया जाए। यह अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है–

1 डिजिटल शासन की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन।

2 लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर डिजिटल तकनीकों के प्रभाव का विश्लेषण।

3 नागरिक सहभागिता और पारदर्शिता में वृद्धि की समीक्षा।

4 डिजिटल विभाजन और साइबर सुरक्षा जैसी चुनौतियों का अध्ययन।

5 भविष्य के डिजिटल लोकतंत्र के लिए नीति सुझाव प्रदान करना।

3. समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या– भारत में डिजिटल शासन के विस्तार के बावजूद अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के मध्य डिजिटल असमानता, इंटरनेट की सीमित पहुँच, तकनीकी साक्षरता की कमी तथा डेटा गोपनीयता के प्रश्न लोकतांत्रिक समानता को प्रभावित करते हैं। मुख्य समस्या यह है कि क्या डिजिटल शासन वास्तव में लोकतंत्र को अधिक सहभागी और उत्तरदायी बना रहा है अथवा यह नई असमानताओं को जन्म दे रहा है? इसी प्रश्न के समाधान हेतु यह अध्ययन किया गया है।

4. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)–

1 डिजिटल शासन की अवधारणा का विश्लेषण करना।

2 भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल शासन की भूमिका का अध्ययन करना।

3 डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की उपलब्धियों का मूल्यांकन करना।

4 नागरिक सहभागिता पर डिजिटल तकनीकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

5 पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व में डिजिटल शासन की भूमिका का विश्लेषण करना।

6 डिजिटल शासन की चुनौतियों की पहचान करना।

7 भविष्य के लिए नीति सुझाव प्रस्तुत करना।

5. शोध प्रश्न (Research Questions)–

1 डिजिटल शासन की अवधारणा क्या है?

2 भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल शासन की क्या भूमिका है?

3 डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने शासन व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया है?

4 क्या डिजिटल शासन नागरिक सहभागिता को बढ़ाता है?

5 डिजिटल शासन के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ कौन–सी हैं?

6 डिजिटल लोकतंत्र को अधिक प्रभावी बनाने हेतु कौन–से उपाय आवश्यक हैं?

6. परिकल्पना (Hypothesis)-

1 डिजिटल शासन भारतीय लोकतंत्र में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ाता है।

2 डिजिटल तकनीकों के माध्यम से नागरिक सहभागिता में वृद्धि होती है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

3 डिजिटल शासन प्रशासनिक दक्षता को सुदृढ़ करता है।

4 डिजिटल विभाजन लोकतांत्रिक समानता के समक्ष प्रमुख चुनौती है।

5 साइबर सुरक्षा और डेटा गोपनीयता डिजिटल लोकतंत्र की स्थिरता को प्रभावित करती हैं।

7. अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ– यह अध्ययन भारतीय लोकतंत्र और डिजिटल शासन के संबंधों तक सीमित है। इसमें मुख्यतः 2014 के बाद लागू डिजिटल इंडिया कार्यक्रम तथा अन्य प्रमुख ई–गवर्नेंस पहलों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की सीमाएँ–

1 प्राथमिक सर्वेक्षण का अभाव।

2 द्वितीयक स्रोतों पर निर्भरता।

3 तकनीकी परिवर्तनों के कारण आँकड़ों की निरंतर परिवर्तनशीलता।

4 कुछ नवीन डिजिटल परियोजनाओं के दीर्घकालिक प्रभावों का अभाव।

8. शोध प्रविधि (Research Methodology)– प्रस्तुत शोध का आधार गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति है। अध्ययन में डिजिटल शासन तथा भारतीय लोकतंत्र के मध्य संबंधों का व्यापक एवं समग्र विश्लेषण किया गया है। शोध का स्वरूप मुख्यतः वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक तथा विश्लेषणात्मक है, जिसके माध्यम से डिजिटल शासन की अवधारणा, उसके विकास, लोकतांत्रिक संस्थाओं पर उसके प्रभाव, नागरिक सहभागिता में उसकी भूमिका तथा उससे उत्पन्न चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए आवश्यक तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों, शोध–पत्रों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नलों, सरकारी रिपोर्टों, नीति आयोग की रिपोर्टों, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रकाशनों, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से संबंधित दस्तावेजों, संयुक्त राष्ट्र ई–गवर्नमेंट सर्वेक्षण रिपोर्टों, विश्व बैंक की रिपोर्टों, भारतीय रिज़र्व बैंक के प्रकाशनों तथा विभिन्न सरकारी वेबसाइटों से प्राप्त आंकड़ों एवं सूचनाओं का उपयोग किया गया है। साथ ही डिजिटल शासन, ई–गवर्नेंस, डिजिटल लोकतंत्र, नागरिक सहभागिता, डेटा गोपनीयता तथा साइबर सुरक्षा से संबंधित उपलब्ध साहित्य का भी गहन अध्ययन किया गया है।

तथ्यों के विश्लेषण हेतु विषय–वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है। इसके माध्यम से विभिन्न सरकारी योजनाओं, नीतिगत दस्तावेजों तथा शोध अध्ययनों में निहित अवधारणाओं, विचारों एवं निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। डिजिटल इंडिया, आधार, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, डिजिलॉकर, कोविन, ई–कोर्ट्स तथा मायगव जैसे प्रमुख डिजिटल प्लेटफॉर्मों का अध्ययन उदाहरणात्मक दृष्टिकोण से किया गया है ताकि भारतीय लोकतंत्र पर उनके प्रभावों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। अध्ययन में ऐतिहासिक पद्धति का भी उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से भारत में डिजिटल शासन के विकास की प्रक्रिया का क्रमिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही तुलनात्मक पद्धति के आधार पर पारंपरिक प्रशासनिक व्यवस्था और डिजिटल शासन प्रणाली के मध्य अंतर को स्पष्ट किया गया है। शोध में उपलब्ध सांख्यिकीय आंकड़ों, सरकारी अभिलेखों तथा विभिन्न संस्थागत रिपोर्टों का

उपयोग कर डिजिटल सेवाओं के विस्तार, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की वृद्धि, डिजिटल भुगतान प्रणाली के विकास तथा नागरिक सेवा वितरण में आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का परस्पर सत्यापन किया गया है। शोध के दौरान वस्तुनिष्ठता बनाए रखने का प्रयास किया गया है तथा किसी विशेष दृष्टिकोण का समर्थन या विरोध करने के स्थान पर उपलब्ध तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रविधि डिजिटल शासन एवं भारतीय लोकतंत्र के अंतर्संबंधों को समझने तथा उनके प्रभावों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित विश्लेषण करने के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करती है।

9. डिजिटल शासन की अवधारणा– डिजिटल शासन समकालीन प्रशासनिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका संबंध सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शासन प्रक्रियाओं, सार्वजनिक सेवाओं, निर्णय–निर्माण तथा नागरिक सहभागिता को अधिक प्रभावी, पारदर्शी, उत्तरदायी एवं सहभागी बनाने से है। यह केवल सरकारी सेवाओं के कम्प्यूटरीकरण या ऑनलाइन उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि शासन की संपूर्ण संरचना, कार्यप्रणाली तथा नागरिक–सरकार संबंधों में तकनीकी नवाचारों के समावेश को अभिव्यक्त करता है। डिजिटल शासन का उद्देश्य प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि करना, सेवा वितरण को सरल बनाना, भ्रष्टाचार को कम करना तथा नागरिकों को शासन प्रक्रिया में अधिक सक्रिय भूमिका प्रदान करना है। वैश्वीकरण, सूचना क्रांति तथा इंटरनेट के तीव्र विस्तार ने शासन की पारंपरिक अवधारणाओं को परिवर्तित किया है। पहले जहाँ शासन का स्वरूप मुख्यतः कागजी अभिलेखों, प्रत्यक्ष कार्यालयी प्रक्रियाओं तथा केंद्रीकृत निर्णय–निर्माण पर आधारित था, वहीं डिजिटल शासन इन प्रक्रियाओं को इलेक्ट्रॉनिक एवं ऑनलाइन माध्यमों से संचालित करने की व्यवस्था प्रदान करता है। इसके माध्यम से नागरिक किसी भी समय और किसी भी स्थान से सरकारी सेवाओं तक पहुँच प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल शासन शासन और नागरिकों के मध्य की दूरी को कम करने तथा प्रशासन को अधिक नागरिक–केंद्रित बनाने का कार्य करता है। डिजिटल शासन का आधार ई–गवर्नेंस की अवधारणा में निहित है। ई–गवर्नेंस को डिजिटल शासन का प्रारंभिक स्वरूप माना जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य सरकारी सेवाओं को इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से उपलब्ध कराना था। समय के साथ डिजिटल तकनीकों के विकास ने ई–गवर्नेंस को व्यापक रूप प्रदान किया और डिजिटल शासन की अवधारणा विकसित हुई। डिजिटल शासन में केवल सेवा वितरण ही नहीं, बल्कि डिजिटल लोकतंत्र, ई–भागीदारी, ई–परामर्श, डिजिटल उत्तरदायित्व तथा डेटा–आधारित नीति निर्माण जैसी व्यवस्थाएँ भी शामिल हैं।

डिजिटल शासन की प्रमुख विशेषताओं में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, दक्षता, सहभागिता, समावेशन तथा नवाचार प्रमुख हैं। पारदर्शिता के माध्यम से नागरिकों को सरकारी सूचनाओं और निर्णयों तक सहज पहुँच प्राप्त होती है। उत्तरदायित्व प्रशासन को नागरिकों के प्रति अधिक जवाबदेह बनाता है। दक्षता प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल और तीव्र बनाती है। सहभागिता नागरिकों को नीतिगत चर्चाओं और निर्णय–निर्माण में योगदान देने का अवसर प्रदान करती है, जबकि समावेशन का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को डिजिटल सेवाओं से जोड़ना है। नवाचार शासन की समस्याओं के समाधान हेतु नई तकनीकों के प्रयोग को प्रोत्साहित करता है। डिजिटल शासन के अंतर्गत सरकार और विभिन्न हितधारकों के मध्य अनेक प्रकार के संबंध

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

स्थापित होते हैं। इनमें सरकार से नागरिक (Government to Citizen–G2C), सरकार से व्यवसाय (Government to Business–G2B), सरकार से सरकार (Government to Government–G2G) तथा सरकार से कर्मचारी (Government to Employee–G2E) संबंध प्रमुख हैं। G2C मॉडल के माध्यम से नागरिकों को जन्म–मृत्यु प्रमाणपत्र, पासपोर्ट, कर भुगतान, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तथा शिकायत निवारण जैसी सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाती हैं। G2B मॉडल व्यापारिक गतिविधियों, लाइसेंसिंग तथा कराधान प्रक्रियाओं को सरल बनाता है। G2G मॉडल विभिन्न सरकारी विभागों के मध्य समन्वय स्थापित करता है, जबकि G2E मॉडल सरकारी कर्मचारियों के प्रशासनिक प्रबंधन को सुदृढ़ बनाता है।

भारत में डिजिटल शासन की अवधारणा को विशेष गति राष्ट्रीय ई–गवर्नेंस योजना तथा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्त हुई। डिजिटल इंडिया का उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना है। इसके अंतर्गत डिजिटल अवसंरचना का निर्माण, सरकारी सेवाओं का ऑनलाइन वितरण तथा नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। आधार, डिजिलॉकर, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस, भारतनेट, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, ई–कोर्ट्स, ई–पंचायत, कोविन तथा मायगव जैसे प्लेटफॉर्म डिजिटल शासन के व्यावहारिक उदाहरण हैं।

लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से डिजिटल शासन का महत्व अत्यंत व्यापक है। यह नागरिकों को सूचना तक पहुँच, शिकायतों के निवारण, सरकारी नीतियों पर सुझाव देने तथा सार्वजनिक निर्णय–निर्माण में भाग लेने के अवसर प्रदान करता है। इसके माध्यम से शासन अधिक खुला, पारदर्शी तथा उत्तरदायी बनता है। साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म नागरिकों और सरकार के बीच निरंतर संवाद स्थापित कर लोकतांत्रिक सहभागिता को मजबूत करते हैं। इस प्रकार डिजिटल शासन केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को अधिक प्रभावी, समावेशी और नागरिक–केंद्रित बनाने की एक व्यापक प्रक्रिया है। हालाँकि डिजिटल शासन के समक्ष डिजिटल विभाजन, तकनीकी साक्षरता की कमी, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता तथा ऑनलाइन दुष्प्रचार जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इसलिए डिजिटल शासन की सफलता केवल तकनीकी अवसंरचना पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसके लिए समावेशी नीतियों, कानूनी सुरक्षा, नागरिक जागरूकता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण की भी आवश्यकता होती है। इस प्रकार डिजिटल शासन आधुनिक लोकतांत्रिक प्रशासन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, कुशल एवं जनोन्मुख बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। डिजिटल शासन का उद्देश्य शासन को अधिक कुशल, पारदर्शी, जवाबदेह तथा नागरिक–केंद्रित बनाना है।

10. भारत में डिजिटल शासन का विकास– भारत में डिजिटल शासन का विकास सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार, प्रशासनिक सुधारों तथा नागरिक–केंद्रित शासन की आवश्यकता के परिणामस्वरूप हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रारम्भिक दशकों में भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था मुख्यतः पारंपरिक कार्यालयी प्रक्रियाओं, कागजी अभिलेखों तथा केंद्रीकृत निर्णय–निर्माण पर आधारित थी। बढ़ती जनसंख्या, प्रशासनिक जटिलताओं, भ्रष्टाचार, लालफीताशाही तथा सेवा वितरण में देरी जैसी समस्याओं ने शासन व्यवस्था को अधिक कुशल और पारदर्शी बनाने की आवश्यकता को जन्म दिया। इसी आवश्यकता ने सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित किया और भारत में डिजिटल शासन के विकास की आधारशिला रखी।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

भारत में डिजिटल शासन की यात्रा 1970 और 1980 के दशक में सरकारी विभागों में कंप्यूटरों के सीमित उपयोग से प्रारम्भ हुई। वर्ष 1976 में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम था। NIC का उद्देश्य सरकारी विभागों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देना तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण करना था। इसके पश्चात विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में कंप्यूटरीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। 1980 के दशक में NICNET नेटवर्क की स्थापना ने केंद्र और राज्य सरकारों के मध्य इलेक्ट्रॉनिक संचार को सुदृढ़ किया, जिससे प्रशासनिक कार्यों में गति और दक्षता आई। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण तथा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के तीव्र विकास ने डिजिटल शासन को नई दिशा प्रदान की। इस अवधि में रेलवे आरक्षण प्रणाली, आयकर विभाग का कंप्यूटरीकरण तथा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा नागरिक सेवाओं के डिजिटलीकरण की पहलें प्रारम्भ हुईं। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और गुजरात जैसे राज्यों ने ई–गवर्नेंस परियोजनाओं को लागू कर प्रशासनिक सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया। इसी काल में इंटरनेट सेवाओं की उपलब्धता ने डिजिटल सेवाओं के विस्तार की संभावनाओं को बढ़ाया।

वर्ष 2000 को भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (Information Technology Act, 2000) के लागू होने से इलेक्ट्रॉनिक लेन–देन और डिजिटल दस्तावेजों को कानूनी मान्यता प्राप्त हुई। इस कानून ने डिजिटल शासन के लिए आवश्यक कानूनी आधार प्रदान किया। इसके पश्चात अनेक सरकारी विभागों ने अपनी सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराना प्रारम्भ किया। भूमि अभिलेखों का डिजिटलीकरण, ऑनलाइन कर भुगतान, ई–टेंडरिंग तथा नागरिक सेवा केंद्रों की स्थापना इसी दिशा में महत्वपूर्ण पहलें थीं।

डिजिटल शासन के विकास में वर्ष 2006 में प्रारम्भ की गई राष्ट्रीय ई–गवर्नेंस योजना एक मील का पत्थर सिद्ध हुई। इस योजना का उद्देश्य सरकारी सेवाओं को नागरिकों तक इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से पहुँचाना था। इसके अंतर्गत विभिन्न मिशन मोड परियोजनाएँ आरम्भ की गईं, जिनमें पासपोर्ट सेवा, आयकर, भूमि अभिलेख, बैंकिंग, बीमा, पेंशन, नगर प्रशासन तथा पंचायत सेवाओं का डिजिटलीकरण शामिल था। इस योजना ने केंद्र और राज्य सरकारों के मध्य समन्वित डिजिटल प्रशासन की आधारभूमि तैयार की। वर्ष 2014 के पश्चात भारत में डिजिटल शासन के विकास को अभूतपूर्व गति प्राप्त हुई। वर्ष 2015 में प्रारम्भ किए गए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने डिजिटल परिवर्तन को राष्ट्रीय प्राथमिकता बना दिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना था। इसके अंतर्गत डिजिटल अवसंरचना का निर्माण, नागरिक सेवाओं का ऑनलाइन वितरण तथा डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किए गए। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत भारतनेट, कॉमन सर्विस सेंटर, डिजिलॉकर, ई–साइन, डिजिटल भुगतान प्रणाली तथा मोबाइल गवर्नेंस जैसी अनेक पहलों को लागू किया गया। आधार परियोजना ने भारत में डिजिटल पहचान की अवधारणा को सशक्त आधार प्रदान किया। आधार संख्या को विभिन्न सरकारी योजनाओं और सेवाओं से जोड़ने के परिणामस्वरूप लाभार्थियों की पहचान, पारदर्शिता तथा सेवा वितरण में उल्लेखनीय सुधार हुआ। इसके साथ ही जनधन–आधार–मोबाइल (JAM) त्रिमूर्ति ने प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (Direct Benefit Transfer–DBT) को प्रभावी बनाया, जिससे सरकारी सहायता सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुँचने लगी और भ्रष्टाचार तथा रिसाव में कमी आई।

डिजिटल भुगतान प्रणाली के क्षेत्र में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस का विकास भारत की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। UPI ने वित्तीय लेन–देन को सरल, सुरक्षित और त्वरित बनाया है। इससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला तथा नकद–आधारित अर्थव्यवस्था से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण को गति प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त वस्तु एवं सेवा कर नेटवर्क ने कर प्रशासन को डिजिटल स्वरूप प्रदान किया, जिससे कर संग्रहण में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ी। स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के डिजिटलीकरण की दिशा में ई–पंचायत, ई–नगरपालिका तथा ऑनलाइन जनसेवा केंद्रों की स्थापना महत्वपूर्ण कदम रहे हैं। इन पहलों ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में प्रशासनिक सेवाओं की पहुँच को बढ़ाया है। नागरिक अब जन्म एवं मृत्यु प्रमाणपत्र, आय प्रमाणपत्र, जाति प्रमाणपत्र, भूमि अभिलेख तथा अन्य अनेक सेवाएँ ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल शासन की उपयोगिता और अधिक स्पष्ट रूप से सामने आई। कोविन प्लेटफॉर्म के माध्यम से विश्व के सबसे बड़े टीकाकरण अभियानों में से एक का सफल संचालन किया गया। ऑनलाइन शिक्षा, टेलीमेडिसिन, डिजिटल भुगतान तथा दूरस्थ कार्य प्रणाली ने यह सिद्ध किया कि संकट की परिस्थितियों में भी डिजिटल शासन प्रशासनिक निरंतरता बनाए रखने में सक्षम है।

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, क्लाउड कंप्यूटिंग तथा बिग डेटा जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग भारतीय शासन प्रणाली में बढ़ रहा है। स्मार्ट सिटी मिशन, डिजिटल स्वास्थ्य मिशन, राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला, डिजिटल कृषि मिशन तथा राष्ट्रीय डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना जैसी पहलें डिजिटल शासन के नए आयाम प्रस्तुत कर रही हैं। इन पहलों का उद्देश्य शासन को अधिक डेटा–संचालित, नागरिक–केंद्रित और प्रभावी बनाना है। इस प्रकार भारत में डिजिटल शासन का विकास एक क्रमिक एवं बहुआयामी प्रक्रिया रही है, जिसने प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा नागरिक सहभागिता को नई दिशा प्रदान की है। यद्यपि डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और तकनीकी साक्षरता जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं, फिर भी यह कहा जा सकता है कि डिजिटल शासन भारतीय लोकतंत्र को अधिक सशक्त, समावेशी और उत्तरदायी बनाने की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

11. भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल शासन की भूमिका– भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक तंत्र है, जिसकी सफलता नागरिक सहभागिता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, विधि के शासन तथा सुशासन के सिद्धांतों पर आधारित है। लोकतंत्र की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि नागरिकों को शासन की प्रक्रियाओं में कितनी सहभागिता प्राप्त है तथा शासन व्यवस्था उनकी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के प्रति कितनी संवेदनशील एवं जवाबदेह है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने लोकतांत्रिक शासन के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया है। डिजिटल शासन ने शासन और नागरिकों के मध्य संवाद, सेवा वितरण तथा निर्णय–निर्माण की प्रक्रियाओं को अधिक सरल, पारदर्शी और प्रभावी बनाया है। भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल शासन की भूमिका केवल प्रशासनिक सुधार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने और नागरिकों को सशक्त बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है।

डिजिटल शासन ने भारतीय लोकतंत्र में पारदर्शिता को बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लोकतंत्र में पारदर्शिता नागरिकों के विश्वास का आधार होती है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से सरकारी

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

योजनाओं, नीतियों, बजट, व्यय तथा प्रशासनिक निर्णयों से संबंधित सूचनाएँ सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराई जा रही हैं। विभिन्न मंत्रालयों और विभागों की वेबसाइटों, ऑनलाइन पोर्टलों तथा सूचना के अधिकार की डिजिटल व्यवस्था ने नागरिकों के लिए सरकारी सूचनाओं तक पहुँच को आसान बनाया है। इससे प्रशासनिक प्रक्रियाओं में खुलापन आया है तथा भ्रष्टाचार और अपारदर्शिता को कम करने में सहायता मिली है। उत्तरदायित्व लोकतांत्रिक शासन का एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व है, जिसे डिजिटल शासन ने सशक्त बनाया है। ऑनलाइन शिकायत निवारण प्रणालियों, जनसुनवाई पोर्टलों तथा नागरिक फीडबैक तंत्रों ने सरकारी अधिकारियों और संस्थाओं को नागरिकों के प्रति अधिक जवाबदेह बनाया है। विभिन्न राज्यों तथा केंद्र सरकार द्वारा संचालित शिकायत निवारण पोर्टल नागरिकों को अपनी समस्याएँ सीधे संबंधित विभागों तक पहुँचाने की सुविधा प्रदान करते हैं। इसके परिणामस्वरूप प्रशासनिक जवाबदेही में वृद्धि हुई है तथा सेवा वितरण की गुणवत्ता में सुधार आया है। नागरिक सहभागिता लोकतंत्र का मूल आधार है और डिजिटल शासन ने इसे नए आयाम प्रदान किए हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से नागरिक अब न केवल शासन संबंधी सूचनाएँ प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि नीति निर्माण और सार्वजनिक विमर्श में भी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। मायगव जैसे डिजिटल मंच नागरिकों को विभिन्न नीतिगत विषयों पर सुझाव देने, विचार साझा करने तथा सरकारी कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्रदान करते हैं। इस प्रकार डिजिटल शासन ने सहभागी लोकतंत्र को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डिजिटल शासन ने सेवा वितरण प्रणाली को अधिक प्रभावी और नागरिक–केंद्रित बनाया है। पहले सरकारी सेवाएँ प्राप्त करने के लिए नागरिकों को विभिन्न कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे, जिससे समय और संसाधनों की हानि होती थी। आज अनेक सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध हैं, जिनमें जन्म एवं मृत्यु प्रमाणपत्र, पासपोर्ट, पेंशन, छात्रवृत्ति, आय एवं जाति प्रमाणपत्र, भूमि अभिलेख तथा विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ शामिल हैं। इससे नागरिकों को त्वरित एवं सुविधाजनक सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं में दक्षता बढ़ी है। भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक और आर्थिक समावेशन को बढ़ावा देने में भी डिजिटल शासन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आधार, जनधन योजना और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से सरकार ने लाखों लाभार्थियों तक विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे पहुँचाया है। इससे बिचौलियों की भूमिका कम हुई है तथा योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ी है। डिजिटल भुगतान प्रणालियों, विशेषकर UPI के विस्तार ने वित्तीय समावेशन को मजबूत किया है और आर्थिक गतिविधियों को अधिक सुलभ बनाया है।

निर्वाचन प्रक्रिया लोकतंत्र की आधारशिला होती है और डिजिटल शासन ने चुनावी लोकतंत्र को भी अधिक प्रभावी बनाने में योगदान दिया है। निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूची का डिजिटलीकरण, ऑनलाइन मतदाता पंजीकरण, चुनाव संबंधी सूचनाओं का ऑनलाइन प्रसार तथा डिजिटल जागरूकता अभियानों ने चुनावी प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाया है। डिजिटल तकनीकों के माध्यम से मतदाताओं को मतदान केंद्रों, उम्मीदवारों और चुनाव कार्यक्रमों की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो रही है, जिससे लोकतांत्रिक भागीदारी को प्रोत्साहन मिला है। स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को सशक्त बनाने में भी डिजिटल शासन की भूमिका महत्वपूर्ण है। ई–पंचायत और ई–नगरपालिका जैसी पहलों ने ग्रामीण एवं शहरी प्रशासन को अधिक प्रभावी बनाया है। पंचायतों और नगर निकायों के कार्यों, योजनाओं तथा वित्तीय गतिविधियों का डिजिटलीकरण स्थानीय स्तर पर पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देता है। इससे स्थानीय लोकतंत्र

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

को मजबूती मिली है तथा नागरिकों की सहभागिता में वृद्धि हुई है। डिजिटल शासन ने लोकतांत्रिक विमर्श और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को भी नई दिशा प्रदान की है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने नागरिकों को अपने विचार व्यक्त करने, शासन की आलोचना करने तथा सार्वजनिक मुद्दों पर चर्चा करने का व्यापक मंच उपलब्ध कराया है। इससे लोकतांत्रिक संवाद को बढ़ावा मिला है और सरकार तथा नागरिकों के मध्य निरंतर संवाद स्थापित हुआ है। हालांकि इसके साथ ही गलत सूचना, फेक न्यूज और ऑनलाइन दुष्प्रचार जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जिनका लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल शासन की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। कोविन प्लेटफॉर्म के माध्यम से टीकाकरण अभियान का सफल संचालन, आरोग्य सेतु ऐप के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी का प्रसार तथा डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से प्रशासनिक निरंतरता बनाए रखना यह दर्शाता है कि संकट की परिस्थितियों में डिजिटल शासन लोकतंत्र की कार्यक्षमता को बनाए रखने में सक्षम है।

यद्यपि डिजिटल शासन ने भारतीय लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और सहभागी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, फिर भी इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। डिजिटल विभाजन, इंटरनेट की असमान उपलब्धता, तकनीकी साक्षरता की कमी, साइबर सुरक्षा के खतरे तथा डेटा गोपनीयता से जुड़े प्रश्न लोकतांत्रिक समावेशन को प्रभावित कर सकते हैं। यदि समाज के कुछ वर्ग डिजिटल संसाधनों तक पहुँच से वंचित रह जाते हैं, तो लोकतंत्र में असमानता बढ़ने की संभावना रहती है। इसलिए डिजिटल शासन की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि तकनीकी विकास के साथ–साथ समावेशी नीतियों, डिजिटल शिक्षा, साइबर सुरक्षा तथा नागरिक अधिकारों के संरक्षण पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाए।

अंततः कहा जा सकता है कि डिजिटल शासन भारतीय लोकतंत्र को अधिक सशक्त, पारदर्शी, उत्तरदायी और नागरिक–केंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है। इसने शासन और नागरिकों के मध्य संबंधों को नया स्वरूप प्रदान किया है तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यक्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भविष्य में डिजिटल प्रौद्योगिकी का समावेशी एवं उत्तरदायी उपयोग भारतीय लोकतंत्र को और अधिक मजबूत तथा प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

12. डिजिटल इंडिया कार्यक्रम और लोकतंत्र– डिजिटल इंडिया कार्यक्रम भारत सरकार की एक महत्त्वाकांक्षी पहल है, जिसकी शुरुआत 1 जुलाई 2015 को भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह कार्यक्रम केवल सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक उद्देश्य शासन, प्रशासन, अर्थव्यवस्था तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में डिजिटल तकनीकों के माध्यम से परिवर्तन लाना है। भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का विशेष महत्व है क्योंकि यह नागरिकों और सरकार के मध्य संबंधों को अधिक सुदृढ़, पारदर्शी, उत्तरदायी और सहभागी बनाने का प्रयास करता है। इस कार्यक्रम ने लोकतांत्रिक शासन की कार्यप्रणाली को आधुनिक स्वरूप प्रदान करते हुए नागरिकों को शासन प्रक्रिया के केंद्र में स्थापित करने का प्रयास किया है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम तीन प्रमुख स्तंभों पर आधारित है, प्रत्येक नागरिक के लिए डिजिटल अवसंरचना, मांग पर शासन एवं सेवाएँ तथा नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण। ये तीनों स्तंभ लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांतों, समान अवसर, सहभागिता, पारदर्शिता तथा सुशासन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

भूमिका निभाते हैं। डिजिटल अवसंरचना का विकास नागरिकों को डिजिटल सेवाओं तक पहुँच प्रदान करता है, जबकि डिजिटल सशक्तिकरण उन्हें शासन प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी के लिए सक्षम बनाता है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने लोकतांत्रिक शासन में पारदर्शिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विभिन्न सरकारी विभागों और मंत्रालयों की सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराने से नागरिकों को सूचनाओं तक त्वरित पहुँच प्राप्त हुई है। ई–ऑफिस, ई–प्रोक्योरमेंट, सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली तथा विभिन्न ऑनलाइन पोर्टलों के माध्यम से सरकारी कार्यों की निगरानी और समीक्षा अधिक सरल हुई है। इससे प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता आई है तथा भ्रष्टाचार और अनियमितताओं को नियंत्रित करने में सहायता मिली है। लोकतंत्र में पारदर्शिता नागरिकों के विश्वास को मजबूत करती है और डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है।

लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करने में भी डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ऑनलाइन शिकायत निवारण प्रणालियों, जनसुनवाई पोर्टलों तथा डिजिटल फीडबैक तंत्रों के माध्यम से नागरिक अपनी समस्याएँ सीधे संबंधित विभागों तक पहुँचा सकते हैं। इससे प्रशासनिक अधिकारियों की जवाबदेही बढ़ी है और समस्याओं के समाधान में गति आई है। नागरिक अब सेवाओं की गुणवत्ता का मूल्यांकन भी कर सकते हैं, जिससे शासन अधिक उत्तरदायी और नागरिक–केंद्रित बना है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने नागरिक सहभागिता को नई दिशा प्रदान की है। लोकतंत्र में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी शासन की सफलता का आधार होती है। मायगव जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म नागरिकों को नीतिगत विषयों पर सुझाव देने, सरकारी योजनाओं पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने तथा सार्वजनिक चर्चाओं में भाग लेने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे नीति निर्माण की प्रक्रिया अधिक सहभागी और समावेशी बनी है। नागरिकों और सरकार के मध्य डिजिटल संवाद ने लोकतांत्रिक सहभागिता को मजबूत किया है तथा शासन को अधिक संवेदनशील बनाने में सहायता की है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आधार, डिजिलॉकर, ई–साइन, उमंग, भारतनेट, कॉमन सर्विस सेंटर, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण तथा यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस जैसी अनेक पहलें शुरू की गई हैं, जिन्होंने लोकतांत्रिक शासन को अधिक प्रभावी बनाया है। आधार आधारित पहचान प्रणाली ने सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों की पहचान को सटीक बनाया है, जबकि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण ने सब्सिडी एवं वित्तीय सहायता को सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों तक पहुँचाकर पारदर्शिता और दक्षता में वृद्धि की है। इससे भ्रष्टाचार, रिसाव और बिचौलियों की भूमिका में कमी आई है, जो लोकतांत्रिक सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जनधन योजना, आधार और मोबाइल प्रौद्योगिकी के समन्वय से विकसित JAM (Jan Dhan–Aadhaar–Mobile) ढाँचे ने करोड़ों नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा है। UPI आधारित डिजिटल भुगतान प्रणाली ने वित्तीय लेन–देन को सरल, सुरक्षित और त्वरित बनाया है। इससे आर्थिक लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा मिला है तथा समाज के वंचित वर्गों को आर्थिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय भागीदारी का अवसर प्राप्त हुआ है।

ग्रामीण भारत में डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देने के लिए भारतनेट परियोजना तथा कॉमन सर्विस सेंटरों की स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भारतनेट परियोजना का उद्देश्य ग्राम पंचायतों तक ब्रॉडबैंड इंटरनेट

© www.researchwork.ijarms.org

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

कनेक्टिविटी पहुँचाना है, जबकि कॉमन सर्विस सेंटर ग्रामीण नागरिकों को विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं। इन पहलों ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल पहुँच का विस्तार किया है तथा शासन और नागरिकों के मध्य की दूरी को कम किया है। इससे लोकतंत्र में समावेशन और समान अवसर के सिद्धांतों को बल मिला है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में भी लोकतांत्रिक विकास को गति प्रदान की है। डिजिटल शिक्षा प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन शिक्षण संसाधन, टेलीमेडिसिन सेवाएँ तथा डिजिटल स्वास्थ्य मिशन ने नागरिकों को आवश्यक सेवाओं तक बेहतर पहुँच प्रदान की है। कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल माध्यमों का व्यापक उपयोग यह दर्शाता है कि डिजिटल शासन संकट की परिस्थितियों में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने में सक्षम है। कोविन प्लेटफॉर्म के माध्यम से टीकाकरण अभियान का सफल संचालन विश्व स्तर पर डिजिटल शासन की एक उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में देखा गया। हालाँकि डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए हैं, फिर भी इसके समक्ष कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ विद्यमान हैं। डिजिटल विभाजन, विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच तकनीकी असमानता, लोकतांत्रिक समावेशन के लिए चुनौती बनी हुई है। इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल साक्षरता तथा तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता के कारण समाज के कुछ वर्ग अभी भी डिजिटल सेवाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। इसके अतिरिक्त साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता, ऑनलाइन धोखाधड़ी तथा फर्जी सूचनाओं के प्रसार जैसी समस्याएँ भी डिजिटल लोकतंत्र की विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकती हैं। लोकतंत्र में नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं का संरक्षण अत्यंत आवश्यक होता है। इसलिए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि नागरिकों के डेटा की सुरक्षा, गोपनीयता तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को किस प्रकार सुनिश्चित किया जाता है। डिजिटल तकनीकों का उपयोग लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप हो तथा तकनीकी विकास के लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक समान रूप से पहुँचें, यह सुनिश्चित करना नीति–निर्माताओं की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डिजिटल इंडिया कार्यक्रम भारतीय लोकतंत्र के आधुनिकीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इसने शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, सहभागी तथा नागरिक–केंद्रित बनाया है। डिजिटल सेवाओं के विस्तार, वित्तीय समावेशन, नागरिक सशक्तिकरण तथा प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि के माध्यम से इस कार्यक्रम ने लोकतांत्रिक शासन को नई शक्ति प्रदान की है। यदि डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा तथा डेटा गोपनीयता जैसी चुनौतियों का प्रभावी समाधान किया जाए, तो डिजिटल इंडिया कार्यक्रम भविष्य में भारतीय लोकतंत्र को और अधिक सुदृढ़, समावेशी तथा प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

13. डेटा विश्लेषण– भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल शासन के प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, नीति दस्तावेजों, अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों तथा डिजिटल सेवाओं से संबंधित उपलब्ध सांख्यिकीय आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि पिछले एक दशक में भारत ने डिजिटल शासन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। डिजिटल अवसंरचना के विस्तार, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में वृद्धि, डिजिटल भुगतान प्रणाली के विकास, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के प्रभावी क्रियान्वयन तथा विभिन्न ई–गवर्नेंस सेवाओं के विस्तार ने शासन की कार्यप्रणाली में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है। इन परिवर्तनों का सीधा प्रभाव लोकतांत्रिक पारदर्शिता, प्रशासनिक दक्षता, नागरिक सहभागिता

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

तथा सेवा वितरण की गुणवत्ता पर पड़ा है। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में निरंतर वृद्धि डिजिटल शासन के विस्तार का महत्वपूर्ण संकेतक है। पिछले वर्षों में मोबाइल इंटरनेट सेवाओं की उपलब्धता तथा दूरसंचार क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण इंटरनेट नागरिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इंटरनेट की बढ़ती पहुँच ने नागरिकों को सरकारी सेवाओं, ऑनलाइन सूचनाओं तथा डिजिटल प्लेटफॉर्मों तक आसान पहुँच प्रदान की है। इससे शासन की प्रक्रियाओं में नागरिकों की भागीदारी बढ़ी है तथा प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता आई है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी के विस्तार ने डिजिटल सेवाओं की पहुँच को बढ़ाया है, यद्यपि ग्रामीण–शहरी अंतर अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत विकसित डिजिटल अवसंरचना ने शासन व्यवस्था को नई गति प्रदान की है। भारतनेट परियोजना के माध्यम से ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी से जोड़ने का प्रयास किया गया है। कॉमन सर्विस सेंटर ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों को विभिन्न सरकारी सेवाएँ उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण माध्यम बने हैं। इससे उन नागरिकों को भी डिजिटल सेवाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है जो स्वयं तकनीकी संसाधनों तक पहुँच नहीं रखते। आंकड़े दर्शाते हैं कि लाखों नागरिक नियमित रूप से इन केंद्रों के माध्यम से प्रमाणपत्र, पेंशन, बैंकिंग, बीमा तथा अन्य सार्वजनिक सेवाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

आधार आधारित डिजिटल पहचान प्रणाली डिजिटल शासन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। आधार ने लाभार्थियों की पहचान को अधिक सटीक एवं विश्वसनीय बनाया है। विभिन्न सरकारी योजनाओं को आधार से जोड़ने के परिणामस्वरूप फर्जी लाभार्थियों की संख्या में कमी आई है तथा योजनाओं का लाभ वास्तविक पात्र व्यक्तियों तक पहुँचने लगा है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण प्रणाली के अंतर्गत सब्सिडी, छात्रवृत्ति, पेंशन तथा अन्य आर्थिक सहायता सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में भेजी जा रही है। इससे प्रशासनिक खर्च में कमी आई है तथा भ्रष्टाचार और बिचौलियों की भूमिका सीमित हुई है। उपलब्ध आंकड़े संकेत करते हैं कि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से सरकार को हजारों करोड़ रुपये की बचत हुई है तथा योजनाओं के क्रियान्वयन में अधिक पारदर्शिता आई है।

डिजिटल भुगतान प्रणाली के क्षेत्र में भारत ने वैश्विक स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त की है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस के माध्यम से डिजिटल लेन–देन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। पहले जहाँ अधिकांश आर्थिक गतिविधियाँ नकद आधारित थीं, वहीं आज मोबाइल आधारित भुगतान प्रणाली आम नागरिकों के दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुकी है। छोटे व्यापारियों, किसानों, स्वरोजगार से जुड़े व्यक्तियों तथा सामान्य उपभोक्ताओं द्वारा डिजिटल भुगतान का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। इससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला है तथा आर्थिक गतिविधियों में पारदर्शिता आई है। डिजिटल भुगतान ने सरकारी सहायता और कल्याणकारी योजनाओं के वितरण को भी अधिक प्रभावी बनाया है। सरकारी सेवाओं के डिजिटलीकरण ने प्रशासनिक दक्षता में महत्वपूर्ण सुधार किया है। डिजिलॉकर, उमंग, ई–डिस्ट्रिक्ट, ई–कोर्ट्स तथा अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से नागरिकों को अनेक सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा रही हैं। पहले जिन सेवाओं के लिए नागरिकों को सरकारी कार्यालयों के अनेक चक्कर लगाने पड़ते थे, वे अब ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त की जा सकती हैं। इससे समय और संसाधनों की बचत हुई है तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं की पारदर्शिता बढ़ी है। डिजिलॉकर के माध्यम से नागरिक अपने महत्वपूर्ण दस्तावेजों को डिजिटल रूप में सुरक्षित रख सकते हैं, जिससे कागजी दस्तावेजों पर निर्भरता कम हुई है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

लोकतांत्रिक सहभागिता के क्षेत्र में भी डिजिटल शासन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मायगव जैसे प्लेटफॉर्मों ने नागरिकों को शासन से सीधे संवाद स्थापित करने का अवसर प्रदान किया है। विभिन्न नीतिगत विषयों पर नागरिकों से सुझाव प्राप्त करने तथा जनमत को समझने के लिए डिजिटल मंचों का उपयोग बढ़ा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से सरकार और नागरिकों के बीच संवाद अधिक सक्रिय हुआ है। इससे लोकतंत्र की सहभागी प्रकृति को बल मिला है तथा नागरिकों में शासन के प्रति जागरूकता बढ़ी है। हालांकि यह भी देखा गया है कि सोशल मीडिया पर गलत सूचना और दुष्प्रचार के प्रसार ने लोकतांत्रिक विमर्श के समक्ष नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल शासन की प्रभावशीलता का महत्वपूर्ण परीक्षण हुआ। कोविन प्लेटफॉर्म के माध्यम से टीकाकरण पंजीकरण, प्रमाणपत्र वितरण तथा टीकाकरण प्रबंधन को सफलतापूर्वक संचालित किया गया। यह विश्व के सबसे बड़े डिजिटल स्वास्थ्य अभियानों में से एक था। महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा, टेलीमेडिसिन, डिजिटल भुगतान तथा ई–ऑफिस प्रणालियों ने प्रशासनिक निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे यह सिद्ध हुआ कि संकट की परिस्थितियों में डिजिटल शासन प्रशासनिक क्षमता और लोकतांत्रिक सेवा वितरण को बनाए रखने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

डेटा विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि डिजिटल शासन की उपलब्धियों के बावजूद कुछ गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं। डिजिटल विभाजन अभी भी एक प्रमुख समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, महिलाओं तथा वरिष्ठ नागरिकों के बीच डिजिटल पहुँच और डिजिटल साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया जाता है। इंटरनेट और स्मार्टफोन की उपलब्धता में असमानता लोकतांत्रिक सहभागिता को प्रभावित कर सकती है। यदि समाज के कुछ वर्ग डिजिटल संसाधनों से वंचित रह जाते हैं, तो शासन के लाभों का समान वितरण सुनिश्चित नहीं हो पाएगा। साइबर सुरक्षा और डेटा गोपनीयता भी डिजिटल शासन के महत्वपूर्ण आयाम हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्मों के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर अपराध, डेटा चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी तथा हैकिंग की घटनाओं में वृद्धि देखी गई है। नागरिकों के व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा लोकतांत्रिक अधिकारों से जुड़ा हुआ प्रश्न है। इसलिए डिजिटल शासन की सफलता के लिए तकनीकी अवसंरचना के साथ–साथ मजबूत साइबर सुरक्षा व्यवस्था और प्रभावी डेटा संरक्षण तंत्र आवश्यक है।

समग्र रूप से विश्लेषण यह दर्शाता है कि डिजिटल शासन ने भारतीय लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, सहभागी तथा नागरिक–केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल तकनीकों ने प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि की है, सेवा वितरण को सरल बनाया है तथा नागरिकों और सरकार के मध्य संवाद को सशक्त किया है। हालांकि डिजिटल विभाजन, तकनीकी साक्षरता की कमी, साइबर सुरक्षा तथा डेटा गोपनीयता जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। इसलिए डिजिटल शासन के भविष्य की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि तकनीकी विकास के लाभों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक किस प्रकार समान रूप से पहुँचाया जाता है तथा नागरिक अधिकारों और लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा को किस प्रकार सुनिश्चित किया जाता है। इस दृष्टि से डिजिटल शासन भारतीय लोकतंत्र के विकास का एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो समावेशी और उत्तरदायी शासन की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

14. डिजिटल शासन के लोकतांत्रिक लाभ– डिजिटल शासन ने भारतीय लोकतंत्र को अधिक प्रभावी, पारदर्शी, उत्तरदायी तथा नागरिक–केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

के व्यापक उपयोग ने शासन और नागरिकों के मध्य संबंधों को सुदृढ़ किया है तथा लोकतांत्रिक मूल्यों को व्यावहारिक रूप से मजबूत करने में सहायता प्रदान की है। डिजिटल तकनीकों के माध्यम से शासन की प्रक्रियाएँ अधिक सरल, त्वरित और सुलभ हुई हैं, जिससे नागरिकों का लोकतांत्रिक संस्थाओं पर विश्वास बढ़ा है। डिजिटल शासन का सबसे महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक लाभ पारदर्शिता में वृद्धि है। लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि नागरिकों को शासन से संबंधित सूचनाएँ कितनी सहजता से उपलब्ध हैं। विभिन्न सरकारी वेबसाइटों, ऑनलाइन पोर्टलों तथा डिजिटल सूचना प्रणालियों के माध्यम से नीतियों, योजनाओं, बजट, व्यय तथा प्रशासनिक निर्णयों से संबंधित जानकारी नागरिकों तक आसानी से पहुँच रही है। इससे प्रशासनिक प्रक्रियाओं में खुलापन आया है तथा भ्रष्टाचार और गोपनीयता की प्रवृत्ति में कमी आई है। नागरिक अब सरकारी कार्यों की निगरानी और मूल्यांकन करने में अधिक सक्षम हुए हैं।

डिजिटल शासन ने उत्तरदायित्व को भी मजबूत किया है। ऑनलाइन शिकायत निवारण पोर्टल, जनसुनवाई प्रणालियाँ तथा नागरिक फीडबैक तंत्र प्रशासन को अधिक जवाबदेह बनाते हैं। नागरिक अपनी समस्याओं और शिकायतों को सीधे संबंधित अधिकारियों तक पहुँचा सकते हैं तथा उनकी प्रगति की निगरानी भी कर सकते हैं। इससे प्रशासनिक उदासीनता में कमी आई है और सरकारी अधिकारियों की जवाबदेही बढ़ी है। लोकतंत्र में सरकार की उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका को सुदृढ़ करने में डिजिटल शासन अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। नागरिक सहभागिता को बढ़ावा देना डिजिटल शासन का एक अन्य महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक लाभ है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों और सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिक शासन प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने लगे हैं। मायगव जैसे मंचों पर नागरिक विभिन्न नीतिगत विषयों पर अपने सुझाव और विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। इससे लोकतंत्र केवल मतदान तक सीमित न रहकर निरंतर सहभागिता की प्रक्रिया बनता जा रहा है। नागरिकों और सरकार के बीच संवाद की यह नई संस्कृति लोकतांत्रिक शासन को अधिक सहभागी और जनोन्मुख बनाती है।

डिजिटल शासन ने सार्वजनिक सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता में भी सुधार किया है। जन्म एवं मृत्यु प्रमाणपत्र, आय प्रमाणपत्र, पेंशन, छात्रवृत्ति, पासपोर्ट, कर भुगतान तथा अन्य अनेक सेवाएँ अब ऑनलाइन उपलब्ध हैं। इससे नागरिकों को सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता कम हुई है तथा समय और संसाधनों की बचत हुई है। सेवाओं के त्वरित और पारदर्शी वितरण से नागरिकों का शासन व्यवस्था के प्रति विश्वास मजबूत हुआ है। सामाजिक एवं आर्थिक समावेशन के क्षेत्र में भी डिजिटल शासन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधार, जनधन योजना तथा प्रत्यक्ष लाभ अंतरण जैसी पहलों ने सरकारी सहायता और कल्याणकारी योजनाओं को सीधे लाभार्थियों तक पहुँचाने में सहायता की है। इससे गरीब, ग्रामीण तथा वंचित वर्गों को योजनाओं का लाभ अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त होने लगा है। डिजिटल भुगतान प्रणालियों और वित्तीय सेवाओं की उपलब्धता ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है, जो लोकतांत्रिक समानता के सिद्धांत को सुदृढ़ करता है। डिजिटल शासन ने चुनावी लोकतंत्र को भी अधिक प्रभावी बनाया है। मतदाता सूची का डिजिटलीकरण, ऑनलाइन पंजीकरण, चुनावी सूचनाओं का प्रसार तथा डिजिटल जागरूकता अभियानों ने निर्वाचन प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाया है। इससे नागरिकों की चुनावी भागीदारी बढ़ी है तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता मजबूत हुई है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

अंततः कहा जा सकता है कि डिजिटल शासन ने भारतीय लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, सहभागी, समावेशी और नागरिक–केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह केवल प्रशासनिक सुधार का माध्यम नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने तथा नागरिकों को सशक्त बनाने की एक प्रभावी प्रक्रिया है, जो भविष्य में लोकतंत्र की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को और अधिक मजबूत कर सकती है।

15. डिजिटल शासन की चुनौतियाँ– डिजिटल शासन ने प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता और नागरिक सहभागिता को बढ़ावा दिया है, किन्तु इसके समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। सबसे प्रमुख चुनौती डिजिटल विभाजन है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों, अमीर और गरीब वर्गों तथा पुरुषों और महिलाओं के बीच इंटरनेट, स्मार्टफोन तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में असमानता पाई जाती है। इसके कारण सभी नागरिक डिजिटल सेवाओं का समान रूप से लाभ नहीं उठा पाते। तकनीकी साक्षरता की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। समाज का एक बड़ा वर्ग डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन सेवाओं के उपयोग में दक्ष नहीं है, जिससे डिजिटल शासन की प्रभावशीलता प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त साइबर सुरक्षा से जुड़े खतरे निरंतर बढ़ रहे हैं। हैकिंग, डेटा चोरी, साइबर हमले तथा ऑनलाइन धोखाधड़ी जैसी घटनाएँ नागरिकों और सरकारी संस्थाओं दोनों के लिए चिंता का विषय हैं।

डेटा गोपनीयता का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग की आशंका लोकतांत्रिक अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकती है। इसके साथ ही सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर फर्जी समाचार तथा दुष्प्रचार का प्रसार जनमत निर्माण को प्रभावित करता है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के लिए चुनौती उत्पन्न करता है। अतः डिजिटल शासन की सफलता के लिए डिजिटल समावेशन, साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण तथा डिजिटल साक्षरता को सुदृढ़ करना आवश्यक है, ताकि लोकतंत्र के लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक समान रूप से पहुँच सकें।

16. साहित्य समीक्षा – डिजिटल शासन और लोकतंत्र के संबंधों पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक विद्वानों, शोधकर्ताओं तथा संस्थाओं द्वारा व्यापक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों में डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से शासन की दक्षता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा नागरिक सहभागिता में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शासन आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के विकास में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरा है, हालांकि इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

रिचर्ड हीक्स (Richard Heeks, 2006) ने अपने अध्ययन में ई–गवर्नेंस को विकासशील देशों में प्रशासनिक सुधार और सुशासन का एक प्रभावी माध्यम माना है। उनके अनुसार सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकारी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार, पारदर्शिता में वृद्धि तथा प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि ई–गवर्नेंस की सफलता केवल तकनीकी संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संस्थागत क्षमता, राजनीतिक इच्छाशक्ति तथा नागरिक सहभागिता पर भी आधारित होती है।

मैनुअल कैस्टेल्स (Manuel Castells, 2010) ने नेटवर्क समाज (Network Society) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए बताया कि डिजिटल संचार तकनीकों ने शक्ति, राजनीति और शासन की पारंपरिक संरचनाओं को परिवर्तित किया है। उनके अनुसार इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म नागरिकों को सूचना तक पहुँच प्रदान

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

कर लोकतांत्रिक भागीदारी को सशक्त बनाते हैं। उन्होंने डिजिटल संचार को लोकतांत्रिक संवाद और सामाजिक आंदोलनों के लिए महत्वपूर्ण माध्यम माना है।

जान वैन डाइक (Jan Van Dijk, 2012) ने डिजिटल विभाजन (Digital Divide) पर अपने अध्ययन में यह तर्क दिया कि डिजिटल तकनीकों तक असमान पहुँच सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं को बढ़ा सकती है। उनके अनुसार डिजिटल शासन की सफलता तभी संभव है जब समाज के सभी वर्गों को समान रूप से डिजिटल संसाधनों और अवसरों तक पहुँच प्राप्त हो। उन्होंने डिजिटल समावेशन को लोकतांत्रिक विकास की अनिवार्य शर्त माना है।

जेन फाउंटेन (Jane E- Fountain, 2001) ने डिजिटल राज्य (Virtual State) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए बताया कि सूचना प्रौद्योगिकी सरकारी संस्थाओं की कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बना सकती है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल तकनीकों का उपयोग केवल प्रशासनिक प्रक्रियाओं को आधुनिक बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शासन और नागरिकों के बीच संबंधों को भी पुनर्परिभाषित करता है।

डैरेल वेस्ट (Darrell M- West, 2005) ने डिजिटल सरकार (Digital Government) पर अपने अध्ययन में बताया कि ऑनलाइन सेवाओं का विस्तार नागरिकों को अधिक सुविधाजनक और त्वरित सेवाएँ उपलब्ध कराता है। उनके अनुसार डिजिटल प्लेटफॉर्म नागरिकों की संतुष्टि बढ़ाने तथा प्रशासनिक लागत को कम करने में सहायक होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि डिजिटल शासन लोकतांत्रिक पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ाने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

पिप्पा नॉरिस (Pippa Norris, 2001) ने डिजिटल डिवाइड पर अपने अध्ययन में यह दर्शाया कि सूचना प्रौद्योगिकी के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँचते। उन्होंने तकनीकी असमानताओं को लोकतांत्रिक समानता के लिए चुनौती माना तथा डिजिटल समावेशन की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार डिजिटल लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की तकनीकी पहुँच और डिजिटल साक्षरता पर निर्भर करती है।

सब्हाष भटनागर (Subhash Bhatnagar, 2009) ने भारत में ई–गवर्नेंस की विभिन्न परियोजनाओं का विश्लेषण करते हुए पाया कि डिजिटल तकनीकों के उपयोग से सरकारी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार, भ्रष्टाचार में कमी तथा नागरिक संतुष्टि में वृद्धि हुई है। उन्होंने विशेष रूप से भूमि अभिलेख, कर प्रशासन तथा नागरिक सेवा केंद्रों की सफलता को रेखांकित किया है।

डी. सी. मिश्रा (D-C- डपेतं, 2007) ने भारतीय ई–गवर्नेंस प्रणाली का अध्ययन करते हुए बताया कि सूचना प्रौद्योगिकी प्रशासनिक सुधारों का एक प्रभावी उपकरण है। उनके अनुसार ई–गवर्नेंस के माध्यम से सरकार और नागरिकों के बीच संवाद को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है तथा लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ किया जा सकता है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकाशित ई–गवर्नमेंट सर्वेक्षण रिपोर्टों में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है कि डिजिटल शासन सुशासन, पारदर्शिता तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संयुक्त

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

राष्ट्र के अनुसार डिजिटल तकनीकों का प्रभावी उपयोग प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने तथा नागरिकों की भागीदारी को सशक्त करने में सहायक है।

विश्व बैंक की डिजिटल डिविडेंड्स रिपोर्ट (2016) में यह बताया गया है कि डिजिटल तकनीकें आर्थिक विकास और प्रशासनिक सुधारों को गति प्रदान कर सकती हैं, लेकिन इनके लाभ तभी व्यापक रूप से प्राप्त होंगे जब डिजिटल पहुँच, शिक्षा और संस्थागत सुधारों को समान रूप से बढ़ावा दिया जाए। रिपोर्ट में डिजिटल समावेशन को विकास और लोकतंत्र दोनों के लिए आवश्यक बताया गया है।

भारत सरकार की डिजिटल इंडिया संबंधी विभिन्न रिपोर्टों में यह उल्लेख किया गया है कि आधार, डिजिलॉकर, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस, भारतनेट तथा कॉमन सर्विस सेंटर जैसी पहलों ने शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और नागरिक–केंद्रित बनाया है। इन रिपोर्टों के अनुसार डिजिटल तकनीकों के माध्यम से सरकारी सेवाओं की पहुँच और प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

उपलब्ध साहित्य के समग्र अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डिजिटल शासन आधुनिक लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, सहभागी और उत्तरदायी बनाने की क्षमता रखता है। अधिकांश विद्वान इस बात से सहमत हैं कि डिजिटल तकनीकों ने शासन की कार्यक्षमता और नागरिक सहभागिता में वृद्धि की है। साथ ही साहित्य यह भी संकेत करता है कि डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता तथा तकनीकी असमानताएँ डिजिटल लोकतंत्र के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं। अतः डिजिटल शासन की सफलता के लिए तकनीकी विकास के साथ–साथ समावेशी नीतियों, नागरिक जागरूकता और लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण को भी समान महत्व देना आवश्यक है। साहित्य समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण में डिजिटल शासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, किंतु इसके दीर्घकालिक लाभों को सुनिश्चित करने के लिए संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

17. चर्चा – भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल शासन ने शासन की कार्यप्रणाली को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी तथा प्रभावी बनाया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म नागरिकों और सरकार के मध्य दूरी को कम कर रहे हैं। क्ठज, न्च्‍ तथा आधार आधारित सेवाओं ने प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाया है। दूसरी ओर, डिजिटल विभाजन लोकतांत्रिक समानता के सिद्धांत के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करता है। यदि समाज के कुछ वर्ग डिजिटल संसाधनों से वंचित रह जाते हैं, तो लोकतंत्र में असमानता बढ़ सकती है। इसी प्रकार साइबर सुरक्षा और डेटा गोपनीयता के प्रश्न नागरिक अधिकारों से जुड़े हुए हैं। अतः डिजिटल शासन को केवल तकनीकी परियोजना के रूप में नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक सुधार की प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है।

18. निष्कर्ष – डिजिटल शासन इक्कीसवीं सदी के भारत में लोकतांत्रिक प्रशासन के आधुनिकीकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग ने शासन की पारंपरिक कार्यप्रणाली में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है तथा प्रशासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, कुशल और नागरिक–केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल तकनीकों के माध्यम से नागरिकों और सरकार के मध्य संवाद की प्रक्रिया अधिक सशक्त हुई है, जिससे लोकतंत्र की सहभागी प्रकृति को नई दिशा प्राप्त हुई है।

© www.researchwork.ijarms.org

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत में डिजिटल शासन का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में हुआ है, जिसने राष्ट्रीय ई–गवर्नेंस योजना से लेकर डिजिटल इंडिया कार्यक्रम तक अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। आधार, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस, डिजिलॉकर, भारतनेट, कोविन, ई–कोर्ट्स तथा ई–पंचायत जैसी पहलों ने प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि की है तथा सरकारी सेवाओं को नागरिकों के अधिक निकट पहुँचाया है। इन पहलों के माध्यम से शासन की पारदर्शिता बढ़ी है, भ्रष्टाचार में कमी आई है तथा सार्वजनिक संसाधनों के उपयोग में उत्तरदायित्व को बल मिला है।

डिजिटल शासन ने लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नागरिकों को सूचना तक त्वरित पहुँच, ऑनलाइन शिकायत निवारण की सुविधा, नीति निर्माण में सहभागिता तथा सरकारी सेवाओं का आसान लाभ प्राप्त होने से लोकतांत्रिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। मायगव जैसे डिजिटल मंचों ने नागरिक सहभागिता को प्रोत्साहित किया है तथा सरकार और जनता के बीच संवाद को अधिक प्रभावी बनाया है। इस प्रकार डिजिटल शासन ने प्रतिनिधिक लोकतंत्र के साथ–साथ सहभागी लोकतंत्र की अवधारणा को भी सशक्त किया है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने लोकतंत्र को अधिक समावेशी और उत्तरदायी बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। डिजिटल भुगतान प्रणाली, वित्तीय समावेशन, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएँ तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के डिजिटलीकरण ने समाज के विभिन्न वर्गों तक विकास के लाभ पहुँचाने में सहायता की है। विशेष रूप से कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल प्लेटफॉर्मों की प्रभावशीलता ने यह सिद्ध किया कि डिजिटल शासन संकट की परिस्थितियों में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की निरंतरता बनाए रखने में सक्षम है।

हालाँकि डिजिटल शासन की उपलब्धियों के साथ–साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। डिजिटल विभाजन, तकनीकी साक्षरता की कमी, साइबर सुरक्षा के खतरे, डेटा गोपनीयता से जुड़े प्रश्न तथा फर्जी सूचनाओं का प्रसार लोकतांत्रिक शासन के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। यदि समाज के कुछ वर्ग डिजिटल संसाधनों तक पहुँच से वंचित रह जाते हैं, तो लोकतंत्र में समान अवसर और समावेशन के सिद्धांत प्रभावित हो सकते हैं। इसी प्रकार नागरिकों के व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा तथा डिजिटल अधिकारों का संरक्षण भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की विश्वसनीयता के लिए आवश्यक है।

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाओं का विश्लेषण यह संकेत करता है कि डिजिटल शासन ने भारतीय लोकतंत्र में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाने में सकारात्मक भूमिका निभाई है। साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ है कि नागरिक सहभागिता को सुदृढ़ करने और सुशासन को प्रोत्साहित करने में डिजिटल तकनीकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर डिजिटल विभाजन और साइबर सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ डिजिटल लोकतंत्र की प्रभावशीलता को सीमित कर सकती हैं, जिनके समाधान हेतु निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि डिजिटल शासन भारतीय लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में कार्य कर रहा है। यह केवल प्रशासनिक सुधार का उपकरण नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, नागरिक अधिकारों तथा सुशासन को मजबूत करने की एक व्यापक प्रक्रिया है। भविष्य में यदि डिजिटल अवसंरचना का विस्तार, डिजिटल साक्षरता का विकास, डेटा सुरक्षा की गारंटी तथा

समावेशी नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए, तो डिजिटल शासन भारतीय लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, सहभागी और समावेशी बनाने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। इस प्रकार डिजिटल शासन विकसित भारत और सशक्त लोकतंत्र की आधारशिला के रूप में उभरता हुआ दिखाई देता है।

19. सुझाव (Recommendations)–

1 प्रत्येक ग्राम पंचायत तक उच्च गति इंटरनेट पहुँच सुनिश्चित की जाए।

2 डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का व्यापक विस्तार किया जाए।

3 साइबर सुरक्षा अवसंरचना को मजबूत बनाया जाए।

4 डेटा संरक्षण कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।

5 महिलाओं एवं वंचित वर्गों के डिजिटल सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया जाए।

6 सभी सरकारी सेवाओं को बहुभाषी बनाया जाए।

7 कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग हेतु नैतिक दिशानिर्देश विकसित किए जाएँ।

8 डिजिटल शिकायत निवारण तंत्र को अधिक प्रभावी बनाया जाए।

9 ई–पंचायत प्रणाली को और सुदृढ़ किया जाए।

10 नागरिक सहभागिता के लिए ऑनलाइन परामर्श मंचों का विस्तार किया जाए।

11 डिजिटल लोकतंत्र से संबंधित पाठ्यक्रमों को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाए।

12 सोशल मीडिया पर फर्जी सूचनाओं के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।

13 डिजिटल शासन की नियमित स्वतंत्र समीक्षा एवं सामाजिक लेखा परीक्षा कराई जाए।

संदर्भ सूची–

1 Heeks, Richard. *Implementing and Managing e-Government*. Sage Publications, 2006. ISBN: 9780761942410.

2 Castells, Manuel. *The Rise of the Network Society*. Wiley-Blackwell, 2010. ISBN: 9781405196862.

3 Van Dijk, Jan. *The Network Society*. Sage Publications, 2012. ISBN: 9781446251957.

4 Fountain, Jane E. *Building the Virtual State*. Brookings Institution Press, 2001. ISBN: 9780815700775.

5 West, Darrell M. *Digital Government*. Princeton University Press, 2005. ISBN: 9780691128366.

6 Norris, Pippa. *Digital Divide*. Cambridge University Press, 2001. ISBN: 9780521002231.

7 Chadwick, Andrew. *Internet Politics*. Oxford University Press, 2006. ISBN: 9780199296727.

8 Dunleavy, Patrick et al. *Digital Era Governance*. Oxford University Press, 2006. ISBN: 9780199296192.

9 Bellamy, Christine. *Governing in the Information Age*. Open University Press, 2003. ISBN: 9780335212512.

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 05, May 2026

10 Bannister, Frank & Connolly, Regina. *The Future of e-Government*. Springer, 2012. ISBN: 9783642334618.

11 Misra, D.C. *E-Governance in India*. Academic Foundation, 2007. ISBN: 9788171885693.

12 Singh, S.K. *Digital Governance in India*. Rawat Publications, 2018. ISBN: 9788131609543.

13 Gupta, M.P. *Towards E-Government*. Prentice Hall India, 2004. ISBN: 9788120325195.

14 Kumar, Rajesh. *Information Technology and Governance*. Deep & Deep Publications, 2015. ISBN: 9788176298238.

15 Basu, Rumki. *Public Administration in India*. Sterling Publishers, 2019. ISBN: 9788120799934.

16 Bhatnagar, Subhash. *Unlocking E-Government Potential*. Sage Publications, 2009. ISBN: 9788132103040.

17 OECD. *Digital Government Review*. OECD Publishing, 2020. ISBN: 9789264892185.

18 United Nations. *E-Government Survey 2024*. United Nations Publications.

19 Government of India. *Digital India Programme Report*. Ministry of Electronics and IT.

20 NITI Aayog. *India Digital Ecosystem Report*. New Delhi.

21 World Bank. *World Development Report: Digital Dividends*. 2016.

22 Meijer, Albert. *Digital Government*. Palgrave Macmillan, 2015. ISBN: 9781137470438.

23 Tapscott, Don. *The Digital Economy*. McGraw Hill, 2014. ISBN: 9780071835556.

24 Gil-Garcia, J. Ramon. *Enacting Electronic Government Success*. Springer, 2012. ISBN: 9781461414405.

25 United Nations Development Programme. *Digital Governance and Sustainable Development*. UNDP, 2021.

26 Ministry of Panchayati Raj. *e-Panchayat Mission Mode Project Report*.

27 Election Commission of India. *Digital Electoral Reforms Report*.

28 Press Information Bureau. *Digital Governance Initiatives in India*.

29 Ministry of Finance. *Direct Benefit Transfer Annual Report*.